ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 92 अंक : 18
द्वि ज्येष्ठ शुक्ल नवमी
विक्रम संवत् 2075
कलि संवत् 5119
21 जून 2018 से 05 जुलाई 2018
दयानन्दाब्द : 194
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,119
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
डॉ. बलवंत शास्त्री, बहरोड़, अलवर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

21 जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विशेष

यह प्रमाणित तथ्य हैं की योग मुद्रा, ध्यान और योग में श्वसन की विशेष क्रियाओं द्वारा तनाव से राहत मिलती है, योग मन को विभिन्न विषयों से हटाकर स्थिरता प्रदान करता है और कार्य विशेष में मन को स्थिर करने में सहायक होता है।

हम मनुष्य किसी चीज की ओर तभी आकर्षित होते हैं जब उनसे हमें लाभ मिलता है। जिस तरह से योग के प्रति हमलोग आकर्षित हो रहे हैं वह इस बात का संकेत हैं कि योग के कई फायदे हैं। योग को न केवल हमारे शरीर को बल्कि मन और आत्मिक बल को सुदृढ़ और संतुष्टि प्रदान करता है। दैनिक जीवन में भी योग के कई फायदे हैं। जैसे– स्त्री पुरूष, बच्चे, युवा, वृद्ध सभी के लिए योग लाभप्रद और फायदेमंद हैं शरीर क्षमताओं एवं लोच के अनुसार योग में किसी परिवर्तन और बदलाव किया जा सकता हैं। किसी भी स्थिति में योग लाभप्रद होता है।

मन और भावनाओं पर योगः– जीवन में सकारात्मक विचारों का होना बहुत आवश्यक है। निराशात्मक विचार असफलता की ओर ले जाता है। योग से मन में सकारात्मक उर्जा का संचार होता है। योग से आत्मिक बल प्राप्त होता है और मन से चिंता, विरोधाभास एवं निराशा की भावना दूर हो जाती है। मन को आत्मिक शांति एवं आराम मिलता है जिससे मन में प्रसन्नता एवं उत्साह का संचार होता है। इसका सीधा असर व्यक्तित्व एवं सेहत पर होता है।

तनाव से मुक्ति (Stress releaf through Yoga):– तनाव अपने आप में एक बीमारी है जो कई अन्य बीमारियों को निमंत्रण देता है। इस तथ्य को चिकित्सा विज्ञान भी स्वीकार करता है। योग का एक महत्वपूर्ण फायदा यह है कि यह तनाव से मुक्ति प्रदान करता है। योग मुद्रा, ध्यान और योग में श्वसन की विशेष क्रियाओं द्वारा तनाव से राहत मिलती है, यह प्रमाणित तथ्य है। योग मन को विभिन्न विषयों से हटाकर स्थिरता प्रदान करता है और कार्य विशेष में मन को स्थिर करने में सहायक होता है। तनाव मुक्त होने से शरीर और मन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कार्य करने की क्षमता भी बढ़ती है।

मानसिक क्षमताओं का विकास (Mental Functions improvement through Yoga):– स्मरण शक्ति एवं बौद्धिक क्षमता जीवन में प्रगति के लिए प्रमुख साधन माने जाते हैं। योग से मानसिक क्षमताओं का विकास होता है और स्मरण शक्ति पर भी गुणात्मक प्रभाव होता है। योग मुद्रा और ध्यान मन को एकाग्र करने में सहायक होता है। एकाग्र मन से स्मरण शक्ति का विकास होता है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में तार्किक क्षमताओं पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। योग तर्क शक्ति का भी विकास करता है एवं कौशल को बढ़ता है। योग की क्रियाओं द्वारा तार्किक शक्ति एवं कार्य कुशलता में गुणात्मक प्रभाव होने से आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

शरीर में लोच (Physical Functions improvement through Yoga):– योग से

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

शरीर मजबूत और लचीला होता है। योग मांसपेशियों को सुगठित और शरीर को संतुलित रखता है। सुगठित और संतुलित और लोचदार शरीर होने से कार्य क्षमता में भी वृद्धि होती है। कुछ योग मुद्राओं से शरीर की हड्डियां भी पुष्ट और मजबूत होती हैं। यह अस्थि सम्बन्धी रोग की संभावनाओं को भी कम करता है।

सेहत और योग (Yoga and Health):– योग शरीर को सेहतमंद बनाए रखता है और कई प्रकार की शारीरिक और मानसिक परेशानियों को दूर करता है। योग श्वसन क्रियाओं को सुचारू बनाता है। योग के दौरान गहरी सांस लेने से शरीर तनाव मुक्त होता है। योग से रक्त संचार भी सुचारू होता है और शरीर से हानिकारक टॉक्सिन निकल आते हैं। यह थकान, सिरदर्द, जोड़ों के दर्द से राहत दिलाता है एवं ब्लड प्रेसर को सामान्य बनाए रखने में भी सहायक होता है।

युवा चरित्र निर्माण एवं संस्कार शिविर का समापन

चितौडगढ के गांधी नगर स्थित महेश वाटिका में 18 से 35 वर्ष तक के 150 युवाओं का चरित्र निर्माण एवं संस्कार शिविर का शुभारम्भ मध्य प्रदेश गोरक्षा दल संरक्षक संत स्वामी कृष्णानंद द्वारा किया गया। इस अवसर पर मेवाड विश्वविद्यालय के संचालक गोविन्द गदिया, महेश वाटिका के अध्यक्ष शिवनारायण मान्धना, सनातन धर्म प्रचारक आचार्य कर्मवीर मेधार्थी, पश्चिमी रेल्वे बोर्ड सदस्य दिलीप गुप्ता, आर्य समाज निम्बाहेड़ा के संरक्षक व आंजना समाज अध्यक्ष पृथ्वीराज आंजना, पूर्व प्राचार्य रघुनाथ मंत्री, आर्य वीर दल राजस्थान के मंत्री भवदेव शास्त्री तथा कार्यकारी संचालक देवेन्द्र शास्त्री आदि उपस्थित थे। शिविर संयोजक व भारत स्वाभिमान के जिला प्रभारी डॉ एम. एल. धाकड़ के अनुसार 7 दिवसीय पूर्ण आवासीय शिविर में युवाओं में आत्म रक्षा, स्वास्थ रक्षा, आध्यात्मिक उन्नति व राष्ट्र चेतना जागृत करने के उद्देश्य से 9 से 15 जून तक किया गया। शिविर के सफल आयोजन के लिए पतंजलि हरिद्वार व नगर की कई नागरिक संस्थाओं से सहयोग मिला। तथा युवाओं को प्रशिक्षण देने का कार्य राजस्थान आर्यवीर दल की ओर से किया गया। इस शिविर में करीब 50 स्वयं सेवको के दल ने एवं कार्यकर्ताओं ने अपनी सेवायें दी।

डॉ. सुधीर कुमार जी का जोधपुर में सम्मान किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री को डॉ. सुधीर शर्मा का दिनांक 10 जून 2018 को महर्षि दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर में आयोजित अन्तरंग सभा में उनको राजस्थान विश्वविद्यालय में अशोसिएट प्रोफेसर के पद पर चयन होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सभी अन्तरंग सदस्यों की ओर से शॉल उड़ाकर व माल्यार्पण कर भव्य स्वागत किया गया तथा सभी सदस्यों ने उनके मंगलमय भविष्य की शुभकामनायें की और ईश्वर का आभार व्यक्त किया व धन्यवाद किया।

आर्य समाज ब्यावर के विकास पर चर्चा

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमौ: । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

जिज्ञासा एवं समाधान

जिज्ञासा १ – कुछ विद्वान् वेदों का काल पाश्चात्य विद्वानों के आधार पर २००० या ३००० ईसा पूर्व ही मानते हैं, क्या यह ठीक है? और मैक्समूलर ऋग्वेद को दुनिया के पुस्तकालयों की सबसे पुरानी पुस्तक मानता है, क्या मैक्समूलर की यह मान्यता ठीक है? क्या हम आर्यों को भी इसी के अनुसार मानना चाहिए? कृपया, मार्गदर्शन करें।

अनिरुद्ध आर्य, दिल्ली

समाधान– वेदों का काल जब से मानवोत्पत्ति हुई है, तभी से है। आज इस काल को महर्षि दयानन्द के अनुसार १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार ११५वाँ वर्ष (२०१४ के अनुसार) चल रहा है। पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गई वेदों की काल गणना ठीक नहीं है, क्योंकि इनके द्वारा की गई काल गणना निराधार, पक्षपात पूर्ण और कपोलकल्पना मात्र है। इस गणना के लिए इन विद्वानों के पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है। जब हमारा लाखों वर्ष पुराना इतिहास सप्रमाण हमें प्राप्त हो रहा है, तब हम इनकी कुछ हजार वर्ष पूर्व की बात कैसे स्वीकार कर लें? हाँ, इनकी बात को वह स्वीकार कर सकता है जो अपने ऋषियों, महापुरुषों से प्रभावित न होकर, पाश्चात्य संस्कृति व विद्वानों से प्रभावित रहा हो।

कुछ लोगों की निराधार व अल्पज्ञान भरी बात है कि ऋग्वेद की रचना सबसे पहले हुई और इसके बाद अन्य वेदों की। ऐसी मान्यता वाले लोग अथर्ववेद को तो ऋग्वेद से बहुत बाद का मानते हैं। इस बात का भी उनके पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

हमारे ऋषियों के अनुसार चारों वेदों का काल एक ही है, एक ही साथ एक ही समय परमेश्वर ने ४ ऋषियों के हृदयों में चारों वेदों का अलग–अलग ज्ञान दिया, अर्थात् अग्नि ऋषि को ऋग्वेद का, वायु ऋषि को यजुर्वेद का, आदित्य ऋषि को सामवेद का और अङ्गिरा ऋषि को अथर्ववेद का ज्ञान दिया। ऋषियों ने ऐसा कहीं नहीं लिखा कि चारों वेदों की उत्पत्ति अलग–अलग समय में हुई। हमें वेद व ऋषियों के अनेक प्रमाण प्राप्त हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि चारों वेद एक ही समय में उत्पन्न हुए।

जैसे–

यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपाः। –अथर्व. ४.३५.६
ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः सप्त ऋषयोग्नयः।
–अथर्व. १९.९.१२

इन दोनों मन्त्रों में वेद शब्द का बहुवचनान्त वेदाः शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह वेदाः शब्द चारों वेदों का संकेतक है।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।।
–ऋ. १०.९०.९, यजु. ३१.७
यस्मिन्नृचः साम यजुषि यस्मिन्
प्रतिष्ठिता रथानाभाविवाराः। –यजु. ३४.५
यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम्–
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।–अथर्व. १०.७.२०
स्तोमश्च यजुश्चऽऋक् च साम च बृहच्च
रथन्तरञ्च।–यजु. १८.२९
ऋचो नामास्मि यजुंषि
नामास्मि सामानि नामास्मि। –यजु. १०.६७
स उत्तमां दिशमनुव्यचलत्।।
तमृचश्च सामानि च यजूंषि च ब्रह्म चानुव्यचलन्।
–अथर्व. १५.६.७–८
एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्
यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः।।
श.ब्र. १४.५.४.१० व बृहद्.उप. ३४.१०
तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः।
मु. ५.१.१.५

इत्यादि अनेक वेद व ऋषियों के प्रमाण सिद्ध करते हैं कि चारों वेदों का काल एक ही है।

आप मैक्समूलर की मान्यता के विषय में भी जानना चाहते हैं कि उनकी मान्यता ठीक है या नहीं। मैक्समूलर ने तथाकथित भाषाशास्त्र के आधार पर वेदों के रचना काल की सम्भावना सर्वप्रथम १८५९ ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'ए हिस्ट्री ऑफ एशियट संस्कृत लिटरेचर' में की थी। उनकी यह कालावधि किसी तथ्य पर आश्रित न होकर विशुद्ध कल्पना पर अवलम्बित थी, किन्तु यह मान्यता इतनी बार दुहरायी गयी कि परवर्ती समय में आधुनिक इतिहासकारों में बिना सोचे–समझे स्थापित–सी मानी जाने लगी, लेकिन स्वयं मैक्समूलर ने १८८९ में 'जिफोर्ड व्याख्यानमाला' के अन्तर्गत अपने इस मत पर सन्देह प्रकट किया था और ह्विटनी जैसे पाश्चात्य व प्रो. कुञ्जन राजा प्रभृति भारतीय इतिहासकारों ने भी मैक्समूलर के भाषाशास्त्र के आधार पर वेदों के काल सम्बन्धी मत का जोरदार खण्डन किया था। दूसरा जो मैक्समूलर ऋग्वेद को दुनिया की सबसे पुरानी पुस्तक कहता है, उसकी यह बात वेदों की रचना के सम्बन्ध में भ्रम पैदा करने के उद्देश्य से कही गई प्रतीत होती है। ऋषियों–महर्षियों के आधार पर आर्यसमाज की दृढ़ मान्यता के विपरीत ये वेदों का क्रमिक विकास सिद्ध करते हैं, जिससे वेद ईश्वरीय रचना न होकर मानवीय रचना सिद्ध हो सके।

इस सारे प्रसंग को मैक्समूलर की इन मान्यताओं के सन्दर्भ में भी देखा जाना चाहिए कि वह वेदों को बाइबिल से निचली श्रेणी का मानता है। कैथोलिक कॉमनवैल्थ के दिये गये एक साक्षात्कार में यह पूछे जाने पर कि विश्व में कौन–सा धर्मग्रन्थ सर्वोत्तम है, तो मैक्समूलर ने कहा–

"There is no doubt, however, that ethical teachings are far more prominent in the old and New Testament than in any other sacred book'' He also said "It may sound prejudiced] but talking all in all, I say the New Testament- After that, I should place the Quran which in its moral teachings is hardly more than a later edition of the New Testament- Then would follow…- according to my opinion, the Old Testament, The southern Buddhist Tripitika…The Veda and the Avesta" (LLMM, Vol- II, PP.

322 - 323)
अर्थात् ''इसमें कोई सन्देह नहीं कि यद्यपि किसी भी अन्य 'पवित्र पुस्तक' की अपेक्षा (ईसाइयों के धर्म ग्रन्थ) ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट में नैतिक शिक्षायें प्रमुखता से विद्यमान् हैं। उसने यह भी कहा– यह भले ही पक्षपातपूर्ण लगे, लेकिन सभी दृष्टियों से मैं कहता हूँ कि न्यू टेस्टामेंट सर्वोत्तम है। इसके बाद मैं कुरान को कहूँगा जो कि अपनी नैतिक शिक्षाओं में न्यू टेस्टामेंट के नवीन संस्करण के लगभग समीप है। उसके बाद३.. मेरे विचार से ओल्ड टेस्टामेंट (यहूदियों का धर्मग्रन्थ), दी सदर्न बुद्धिस्ट त्रिपिटिका, (बौद्धों का धर्मग्रन्थ) फिर वेद और अवेस्ता (पारसियों का ग्रन्थ) है।''

अतः आर्यों को वेद के सन्दर्भ में मैक्समूलर जैसे लोगों के मत को उद्धृत करने से बचना चाहिए। इसके स्थान पर ऋषियों–महर्षियों के मत को रखना चाहिए। लेकिन अगर कोई आर्य वेदों की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए मैक्समूलर को इस रूप में उद्धृत करता है कि 'मैक्समूलर भी वेदों की प्राचीनता के प्रसंग में एक सत्य को अस्वीकार न कर सका, उसे भी ऋग्वेद को प्राचीनतम पुस्तक स्वीकार करना पड़ा' इस रूप में बात रखी जा सकती है।

ईश्वर का सही रूप न जान पाना ही पाखंडों का आधार–शोभाराम आर्य

आर्य समाज भीमगंजमंडी के साप्ताहिक सत्संग में डी. ए. वी. कोटा के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य ने अपने उद्बोधन में ईश्वर के मुख्य नाम ओम् पर चर्चा की। वेद, उपनिषद् आदि धार्मिक ग्रंथों के उद्धरण देते हुए ईश्वर का मुख्य नाम 'ओम्' बताया गया। अ, उ, म इन तीन वर्णो एवं अव धातु से ओम् शब्द सिद्ध होता है। ईश्वर वर्णो में 'अ' की तरह है जो सभी वर्णो में होता है पर नजर आता नही। जबकि सभी वर्ण 'अ' से ही पूर्णता को प्राप्त होते हैं। ऐसे ही परमात्मा ने सर्व संसार को बनाया है और अपने आप को छिपाया है। वह सबका आधार है फिर भी निराकार है। जनसामान्य की समस्या यह है कि वह वेद आधारित इस ज्ञान से प्रतिकूल जाकर अन्य बातों पर विश्वास करता है अतः वह पाखंडों का शिकार बन जाता है। सभी पाखण्डों से बचने का एक ही मार्ग है वह है ईश्वर के सही रूप का ज्ञान।

इस कार्यक्रम में आर्य समाज जिला कोटा की तरफ से आर्य समाज भीमगंजमण्डी के नवनिर्वाचित प्रधान गिर्राज सिंह चौधरी, मंत्री देवेन्द्र सक्सेना एवं को ाध्यक्ष मनोज गुप्ता तथा पूर्व प्रधान प्रेमनाथ कौशल को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। साथ ही जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को बधाई देते हुए कहा कि यह कार्यकारिणी पूर्व की भांति जिला सभा के रचनात्मक कार्यो में सहयोग प्रदान करती रहेगी तथा महर्षि दयानंद के मिशन को जनजन तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभायेगी। इस कार्यक्रम का सफल संचालन पूर्व प्रधान प्रेमनाथ कौशल के द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में आर्यसमाज भीमगंजमंडी के सभासदों के साथ महावीर नगर आर्यसमाज के प्रधान आर.सी. आर्य, अमन चड्ढा, तथा अन्य जन उपस्थित थे।

अरविंद पाण्डेय
कार्यालय मंत्री

आर्य समाज सुजानगढ़, के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज सुजानगढ़ जिला चूरू राजस्थान का वार्षिक चुनाव रविवार दिनांक 17/06/2018 को आर्य समाज परिसर मे श्री देवेन्द्र जी शास्त्री जयपुर के निदेशानुसार व ओमप्रकाश जी लाहोटी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें पदाधिकारी इस प्रकार रहे...

प्रधान – श्री जगदीश प्रसाद जी आर्य
मंत्री – श्री रविन्द्र आर्य जी
कोषाध्यक्ष – श्री सुगनचंद आर्य जी

रविन्द्र आर, मंत्री

श्री जगदीश जी जखराना का वेद प्रचार कार्यक्रम का विवरण

आर्य प्रतिनिधि सभा के जयपुर संभाग के उपप्रधान श्री जगदीश प्रसाद आर्य (जखराना) दिनांक 4, 5 तथा 6 मई तिजारा आर्य समाज में यज्ञ और वेद प्रचार किया। दिनांक 8 व 9 मई को अलवर में श्री राजेन्द्र आर्य के घर पर यज्ञ करवाया, दिनांक 2, 3 व 4 जून को कमालपुर, कैथल एवं उसके आस–पास अन्य गाँवो मे यज्ञ, प्रवचन एव वेद प्रचार का कार्य किया। 17 जून को आर्य समाज जखराना में यज्ञ किया, इसी प्रकार प्रत्येक शनिवार तथा रविवार को गुआना, डूमरौली, बहरोड, तथा गादोज आदि आर्य समाजों में वेद प्रचार एवं यज्ञ करवाया। इसी प्रकार पूरे अलवर जिले में सभी आर्य समाजों के वार्षिक उत्सव आदि अवसरों पर उपस्थित होकर उनके कार्यक्रमों में भाग लिया। 10 जून जोधपुर के स्मृति भवन में आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में भाग लेकर उचित दिशा निर्देश दिये और 11 जून को जयपुर सभा कार्यालय में मंत्री डॉ. सुधीर जी व अन्य देवेन्द्र आदि सदस्यों से विचार विमर्श करके सभा की उन्नति व वेद प्रचार हेतु भजनोपदेशक रखने की सलाह दी और 12 जून को वापस आर्य समाज जखराना पहुँचकर निरन्तर आर्य समाज की कार्य कर रहा हूँ।

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

आर्य वीरांगनाओं का भव्य व्यायाम प्रदर्शन

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीरांगना दल के संयुक्त तत्वधान में आयोजित आठ दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर का व्यायाम प्रदर्शन के साथ सम्पन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रान्तों से आयीं 80 आर्यवीरांगनाओं ने भाग लेकर गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसमें आर्यवीरांगनाओं को व्यायाम शिक्षिकाओं दीपमाला राजावत, अभिलाषा आर्या तथा कोमल साहू द्वारा आसन, योग, पी.टी., सूर्यनमस्कार, भूमि नमस्कार, लाठी, तलवार, भाला, चाकू एवं जूडो– कराटे आदि का प्रशिक्षण दिया गया। तथा मनीषा आर्या द्वारा वीरांगनाओं के लिए देशभक्ति गीत एवं भजन आदि प्रस्तुत किये। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में श्री अरुण जी गुप्ता समाज सेवी तथा विशिष्ठ अतिथि डॉ. विकासचन्द्र शर्मा आबकारी अधिकारी निरिक्षक अजमेर एवं परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल जी एवं अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

रातानाड़ा जोधपुर का कार्यक्रम सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जोधपुर आगमन (31 मई 1883 ई. प्रातः) के 135वे वर्ष की यादगार में आर्य समाज, जोधपुर (रातानाड़ा) का 123 वाँ वार्षिक उत्सव दिनांक 31 मई से 3 जून 2018 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 31 मई गुरुवार को प्रातः 8 बजे ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। चार दिन तक प्रातः काल यज्ञ का कार्यक्रम चतुर्वेद शतकम् की विशेष आहुतियों के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्म पं. रामनारायण शास्त्री थे। मेरठ के वेद मनीषी डॉ. वेदपाल जी के चार दिन उसमें क्रमशः सत्या सत्य निर्णय, तीन अनादि, सृष्टि और उसका प्रयोजन, ईश्वर व उसका स्वरूप, जीवात्मा व उसका स्वरूप, उपसना, मुक्ति, वर्णाश्रम व उसका प्रयोजन, मानव निर्माण में वैदिक संस्कार का महत्व व पंच महायज्ञ व उसका प्रयोजन पर विशेष व्याख्यान हुए तथा इन्ही सभों के अनुरूप पानीपत, हरियाणा के भजनोपदेशक डॉ. रामनिवास जी ने वेदोपदेश के साथ–साथ हृदयस्पर्शी भजनों द्वारा उपस्थित श्रोताओं का मन मोह लिया। पं. केशवदेव शर्मा सुमेरपुर ने भी सुन्दर भजनोपदेश किए। इस अवसर बागपत (मेरठ), धौलपुर, गाजियाबाद, बुलन्दशहर, बाड़मेर, नागौर, पाली, लाडनू, सुजानगढ़ व हरियाणा आदि से धर्मानुरागी प्रेमी सज्जन लोगो नें सत्संग का लाभ लिया। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह जी शेखावत विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित थे। दिनांक 3 जून ध्वजावतरण के बाद ऋषि लंगर के साथ ही उत्सव का समापन हुआ।

–दुर्गा दास वेदिक

आर्य समाज रातानाड़ा में यज्ञ प्रवचन एवं भजन सुनते आर्यजन

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

मृतात्मा के प्रति RIP लिखने का ''फैशन''

आजकल देखने में आया है कि किसी मृतात्मा के प्रति RIP लिखने का ''फैशन'' चल पड़ा है। ऐसा इसलिए हुआ है, क्योंकि कान्वेंटी दुष्प्रचार तथा विदेशियों की नकल के कारण हमारे युवाओं को धर्म की मूल अवधारणाएँ, या तो पता ही नहीं हैं, अथवा विकृत हो चुकी हैं...RIP शब्द का अर्थ होता है "Rest in Peace" (शान्ति से आराम करो) यह शब्द उनके लिए उपयोग किया जाता है जिन्हें कब्र में दफनाया गया हो। क्योंकि ईसाई अथवा मुस्लिम मान्यताओं के अनुसार जब कभी ''जजमेंट डे'' अथवा ''कयामत का दिन'' आएगा, उस दिन कब्र में पड़े ये सभी मुर्दे पुनर्जीवित हो जाएँगे... अतः उनके लिए कहा गया है, कि उस कयामत के दिन के इंतजार में ''शान्ति से आराम करो''.

लेकिन हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है। हिन्दू शरीर को जला दिया जाता है, अतः उसके "Rest in Peace" का सवाल ही नहीं उठता। हिन्दू धर्म के अनुसार मनुष्य की मृत्यु होते ही आत्मा निकलकर किसी दूसरे नए जीव, काया, शरीर, नवजात में प्रवेश कर जाती है... उस आत्मा को अगली यात्रा हेतु गति प्रदान करने के लिए ही श्राद्धकर्म की परंपरा निर्वहन एवं शान्तिपाठ आयोजित किए जाते हैं। अतः किसी हिन्दू मृतात्मा हेतु ''विनम्र श्रद्धांजलि'', ''श्रद्धांजलि'', ''आत्मा को सदगति प्रदान करें'' जैसे वाक्य विन्यास लिखे जाने चाहिए। जबकि किसी मुस्लिम अथवा ईसाई मित्र के परिजनों की मृत्यु पर उनके लिए RIP लिखा जा सकता है...

होता यह है कि श्रद्धांजलि देते समय भी ''शॉर्टकट (?) अपनाने की आदत से हममें से कई मित्र हिन्दू मृत्यु पर भी '' RIP'' ठोंक आते हैं... यह विशुद्ध ''अज्ञान और जल्दबाजी'' है, इसके अलावा कुछ नहीं... अतः कोशिश करें कि भविष्य में यह गलती ना हो एवं हम लोग ''दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि'' प्रदान करें... ना कि उसे RIP (apart) करें. मूल बात यह है कि चूँकि अंग्रेजी शब्द SOUL का हिन्दी अनुवाद ''आत्मा'' नहीं हो सकता, इसलिए स्वाभाविक रूप से '' RIP और श्रद्धांजलि'' दोनों का अर्थ भी पूर्णरूप से भिन्न है।

धार्मिक अज्ञान एवं संस्कार–परम्पराओं के प्रति उपेक्षा की यही पराकाष्ठा, अक्सर हमें ईद अथवा क्रिसमस पर देखने को मिलती है, जब अपने किसी ईसाई मित्र अथवा मुस्लिम मित्र को बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ देना तो तार्किक एवं व्यावहारिक रूप से समझ में आता है, लेकिन ''दो हिन्दू मित्र'' आपस में एक–दूसरे को ईद की शुभकामनाएँ अथवा ''दो हिन्दू मित्रानियाँ'' आपस में क्रिसमस केक बाँटती फिरती रहें अथवा क्रिसमस ट्री सजाने एक–दूसरे के घर जाएँ, तो समझिए कि निश्चित ही कोई गंभीर ''बौद्धिक–सांस्कारिक गडबड़ी'' है...

आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर का शुभारंम्भ

आर्य समाज सांभरलेक जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज परिसर में आर्य कन्या चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविर का शनिवार को मुख्य अतिथि नगरपालिका अध्यक्ष श्री विनोद कुमार सांभरिया, विशिष्ठ अतिथि व्यापार महासंघ अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार नारनोली की उपस्थिति में आठ दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का शिविर शुभारंभ हुआ। जिसमें आर्य समाज के दिल्ली से आए सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान व्यायाम शिक्षिका अभिलाषा आर्य के नेतृत्व में 150 बालिकाओं ने भाग लिया। जिसमें वीरांगनाओं को पी. टी., सूर्यनमस्कार, भूमि नमस्कार, लाठी, तलवार, भाला, चाकू एवं जूडो– कराटे आदि का प्रशिक्षण दिया दिया जा रहा है। – अतुल आर्य, मंत्री

अंधविश्वास, पाखण्ड फैलाने वाले लोगों पर आर्य समाज ने की सख्त कार्यवाही की मांग

जिले के प्रमुख सरकारी अस्पतालों ने आत्मा ले जाने के नाम पर होने वाले टोने–टोटके एवं तंत्र–मंत्र को रोकने तथा ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने की मांग को लेकर आर्य समाज ने जिला कलेक्टर महोदय कोटा को ज्ञापन सौंपा। आर्य समाज के जिला प्रधान के नेतृत्व में वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता चैयरमेन कृष्णा ब्लड बैंक, प्रेमनाथ कौशल आर्य समाज भीमगंजमण्डी, आर्य समाज रामपुरा के उपमंत्री प्रभुसिंह कुशवाह, आर्य समाज तलवण्डी से वैदमित्र वैदिक ने जिला कलेक्टर कोटा शहर से मिलकर ऐसे अंधविश्वास, पाखण्ड एवं तंत्र–मंत्र को बढावा देने वाले तांत्रिकों, भोपों तथा इस प्रथा के कृत्य में शामिल लोगों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने की मांग की।

जोधपुर संभाग का शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में आर्य वीरांगना राजस्थान प्रान्त के सात दिवसीय संस्कार शिविर का समापन रविवार दिनांक 10 जून को हुआ। इसमें 160 आर्य वीरांगनाओं को आत्मरक्षा के लिए जूडो कराटे, लाठी भाला, तलवार, लेजिम, डंबल्स का प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य रक्षा के लिये योगासन, प्रणायाम, सूर्यनमस्कार, भूमिनमस्कार एवं बौद्धिक प्रशिक्षण संगीत के साथ दिया गया। शिविर की प्रांतीय संचालिका रूपवती देवड़ा ने बताया कि शिविर में सम्पूर्ण राजस्थान से 150 वीरांगनायें तथा हरियाणा से 10 वीरांगनाओं ने भाग लिया।

बीकानेर संभाग का शिविर सम्पन्न

श्रीगंगानगर में चरित्र एवं संस्कार निर्माण शिविर का समापन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया गया। चरित्र एवं संस्कार निर्माण शिविर का संचालन रामनिवास गुणग्राहक द्वारा किया गया। यहाँ आर्य वीर दल राजस्थान के व्यायाम शिक्षक दिनेश कुमार आर्य चित्तोड़गढ़ व शनि आर्य नागौर द्वारा 50 आर्य वीरों को प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर समापन में आर्य समाज के प्रधान, मंत्री तथा सभा के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

आर्य समाज फुलेरा के विकास पर चर्चा

आर्य समाज के विकास कार्यों को लेकर शनिवार दिनांक को 16 जून 2018 आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पदाधिकारियों की बैठक फुलेरा आर्य समाज के प्रधान भंवरलाल जी शर्मा की अध्यक्ष में हुई। इस मौके पर सभा द्वारा फुलेरा आर्य समाज के आय–व्यय का निरिक्षण किया गया। इस मौके पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री डॉ सुधीर कुमार शर्मा, कोषाध्यक्ष डॉ. सदीपन जी, अन्तरंग सदस्य देवेन्द्र शास्त्री एवं सभा के अन्य सदस्य मोजूद रहे।

- **परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।**

– सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- समस्त आर्य समाज अपने भवन पर ओ३म् ध्वाज अनिवार्य रूप से फहरायें एवं मुख्य प्रवेश द्वार एवं भवनों के द्वार पर ''आर्य समाज/आर्य समाज मन्दिर'' इस प्रकार अवश्य अंकित करवायें। यथा समय आर्य समाज भवन, मुख्य द्वार, परिसर की बाउण्ड्री वॉल की मरम्मत, कलर पेन्ट आदि करवायें। आर्य समाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कभी भी आर्य समाज का निरीक्षण किया जा सकता है। कृपया अवगत रहें।
- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' का प्रत्येक अंक नवम्बर–द्वितीय अंक से पीडीएफ फॉरमेट में भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस फॉर्मेट में प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता, नाम एवं सम्पर्क सूत्र aryamartand@gmail.com पर भेजें। वाट्स एप्प पर ''सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति, आर्य वीर राज. सूचना, आर्य वीर दल के अन्य सभी ग्रुप्स में नियमित रूप से उपलब्ध करवाया जा रहा है ।
- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है।

आतिथ्य –आहुति

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा जयपुर में कार्यालय परिसर में निरन्तर आने वाले अतिथियों के लिए अस्थायी आवास एवं भोजन हेतु संचालित आतिथ्य–यज्ञ में अपनी बहुमूल्य आहुति देकर इस पवित्र यज्ञ को सुचारू रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी आहुतिदाताओं का बहुत–बहुत आभार ।

अन्य जो भी इस व्यवस्था के सफल संचालन में अपनी आहुति भेंट करने के इच्छुक हों वे 9352547258 पर सम्पर्क कर सकते हैं। जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृति, विवाह आदि अवसरों पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस अतिथि यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित पुण्यभागी बनें।

आगामी कार्यक्रम

1. 28वाँ आर्य महासम्मेलन अटलांटा (अमेरिका) : 19 से 22 जुलाई 2018
2. इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्ली 25–26–27–28 अक्तूबर, 2018
   संयोजक – अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, दूरभाष : 011–23360150, 23365959, 9540029044
   Email : aryasabha@yahoo.com;
   website: www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषक:-
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।